

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 01/07/2016

● अंक - 572 ● तारीख - 02 जुलाई 2016, आषाढ कृष्ण - 13 ● शनिवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया

● पृष्ठ - 01

अनमोल वचन (सत्यसाईं बाबा)



दूसरों के गुण और अपने दोष सदा ढूँढते रहो।

ऐसी लागी लगन, मीरा हो गयी मगन (भजन)



ऐसी लागी लगन, मीरां हो गई मगन,
वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी-2

महलों में पली, बन के जोगन चली,
मीरां रानी दीवानी कहलाने लगी-2

ऐसी लागी लगन-2
कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं
मीरां गोविन्द गोपाल गाने लगी-2

बैठी संतो के संग, रंगी मोहन के रंग
मीरां प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी-2
वो तो गली-गली हरिगुण....

राणा ने विष दिया, मानो अमृत पिया
मीरां सागर में सरिता समाने लगी-2

दुःख लाखों सहे, मुख से गोविन्द कहे
मीरां गोविन्द गोपाल गाने लगी-2
वो तो गली-गली हरिगुण....

ऐसा करूँगा (प्रसंग)



बाल गंगाधर तिलक अपने साथियों के साथ छात्रावास की छत पर बैठे गपशप कर रहे थे। तभी साथियों के सामने यह सवाल आया कि यदि अचानक किसी पर संकट आ जाए, तो उसकी रक्षा के लिए नीचे जल्दी

से जल्दी जाने के लिए कौन, कैसे जाएगा ? पहला लड़का बोला, "मैं सीढ़ियों से दौड़ता हुआ निकल जाऊँगा।" दूसरे ने कहा "मैं रस्सी लगाकर नीचे उतर जाऊँगा।" एक ने पूछा "तिलक, तुम संकट की घड़ी में क्या करोगे? बाल गंगाधर तिलक ने अपनी धोती कसी और बड़ी सावधानी और कुशलता से "मैं ऐसा करूँगा," कहकर नीचे छलौंग लगा ली। यही बालक आगे चलकर अपने साहसी गुणों के कारण लोकमान्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

देह-दान करने आगे आईं तीन पीढ़ी अब दूसरों को कर रहे हैं प्रेरित

बिलासपुर विद्यानगर निवासी महेंद्र जैन ने 15 साल पहले पत्नी शोभा जैन के साथ देहदान करने का संकल्प लिया था। जब उन्होंने खुद व पत्नी के भी देहदान का संकल्प लेने की जानकारी दी तो पिता भी तैयार हो गए। पिता के निधन के बाद



महेंद्र जैन ने उनका शरीर मेडिकल कॉलेज सिम्स को सुपुर्द कर दिया। अब वे दूसरों को भी प्रेरित कर रहे हैं। उनके दोनों बच्चे पहले ही संकल्प ले चुके हैं। पिता से शुरू हुई देहदान की परंपरा को अब उनके बच्चे भी आगे बढ़ाने के लिए तैयार हैं।

फल ही नहीं औषधि भी है जामुन

फल ही नहीं, औषधि भी है जामुन क्योंकि इसका प्रयोग दवा के रूप में भी किया जाता है।

मधुमेह:
जामुन का सिरका, ताजा पका फल, जामुन का रस या गुठली का प्रयोग मधुमेह रोग में किया जाता है। जामुन की गुठलियों में पाया जाने वाला जम्बोलीन नामक तत्व स्टार्च को शुगर में



परिवर्तित होने से रोकता है, जिससे रक्त में शुगर की मात्रा नहीं बढ़ पाती। जामुन की गुठली का चूर्ण 3-3 ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन दो-तीन बार लेने से मधुमेह में पूरा लाभ मिलता है।

अधिक मूत्र आना:
जामुन की गुठली का चूर्ण 1-2 चम्मच की मात्रा में सुबह शाम पानी के साथ लेने से अधिक मूत्र आने की समस्या में लाभ मिलता है और धीरे-धीरे मूत्र की मात्रा सामान्य हो जाती है। दस्त और पेचिश :जामुन की गुठली का चूर्ण 1-2 चम्मच की मात्रा में मट्टे के साथ दिन में दो-तीन बार लें। दस्त और पेचिश में लाभ मिल जाए तो यह प्रयोग बंद कर दें।

भय का भूत सबसे बड़ा भूत

तुम खुश हो रहे हो! तुम्हारे जैसा बेवकूफ नहीं देखा, और हाँ, अगर फिर भी निंदा सुनने का शौक है तो एक काम करिए-अपने कान में ऊपर के हिस्से में डस्ट बिन और नीचे प्लीज यूज भी लिखवा लीजिए। दुनिया में जो बड़े पाप हो रहे हैं उन्हें कौन कर रहा है? भूखे पेट का आदमी? नहीं। खाली पेट का आदमी तो पेट भरने जितना ही पाप करता है। लेकिन यह जो भरे पेट का आदमी है ना वह पेट्टी और कोठी भरने जितने बड़े-बड़े पाप करता है। महावीर वाणी है- ईमानदारी से पेट भरा जा सकता है, पेट्टी और कोठी नहीं। समुद्र शुद्ध जल से कहां भरा जा सकता है? सभी गंदे नदी-नाले का जल जब समुद्र में गिरता है, तब कहीं वह भरता है। याद रखना-आदमी पहले तो अमीर होने के लिए बड़े पाप करता है और फिर अमीर होकर और अमीर होने के लिए बड़े पाप करता है और फिर अपनी अय्याशी पर पाप करता है। जीवन एक क्रिकेट है। सृष्टि के स्टेडियम में धरती के विराट पिच पर समय बोलिंग कर रहा है। शरीर बल्लेबाज है। धर्मराज अम्पायर है। बीमारियाँ फिल्टरिंग कर रही हैं। यमराज विकेट-कीपर हैं और प्राण विकेट हैं। इस डे नाइट के मैच में हमें रचनात्मकता के जलवे दिखाना है। सांसां के सीमित ओवर में सृजन के रन बनाना है। गिल्लियाँ उड़ने का अर्थ है- सांस का टूट जाना। एल.बी.डब्ल्यू. यानी हार्ट अटैक। दुर्घटना में मरना-रन आउट होना है। सीमा पर शहीद होना कैच आउट कहलाता है और आत्मघात का मतलब हिट विकेट हो जाना है। हत्या का अर्थ स्टम्पआउट होना। हालांकि कुछ आक्रामक खिलाड़ी जल्दी पैवेलियन लौट जाते हैं, पर पारी ऐसी खेलते हैं कि कीर्तिमान बना जाते हैं। सबका अपना-रन रेट है। जीवन एक क्रिकेट है। भय से बचें। भय का भूत सबसे बड़ा भूत है।

मानव मन के बोल

मानव मात्र एक समाज



गतांक से आगे...
धर्मक्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।। (86)
हे संजय! धर्म क्षेत्र में, कुरुक्षेत्र कैसे हुआ? कुरुक्षेत्र मतलब कर्म योग कैसे हुआ? क्या सत् कर्म हुए? क्या दुष्कर्म हुए? क्या न्याय के पक्ष की जीत होगी? एक श्लोक सुना और भारत के सम्पूर्ण मन्दिरों के जीर्णोद्धार का कार्य हाथ में ले लिया महारानी अहिल्या बाई इन्दौर ने। मैं जब गया जी में दर्शन करने गया, तो वहाँ शिलालेख पढ़ा कि विष्णुपाद मन्दिर का जीर्णोद्धार इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने इस सन् में करवाया।

जो ओरो के हित रोता है

प्रभु की कृपा आज शुभवार, शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र, सारे बढ़िया योग मिल गये महाराज। एक-एक क्षण ऐसा लगता है, सारे अच्छे संयोग आज प्रातःकाल उपस्थित हो गये और मैं जब डूबता उतरता जा रहा हूँ, जीवन के पावन क्षणों में, आनन्द के क्षणों में, वो आनन्द जो दुख को समाप्त कर दे। सुख-दुख को दबाता है, आनन्द दुःख को समाप्त रहता है। करने में सावधान, होने में प्रसन्न रहना चाहिए, पिछली पंक्तियों में आपश्री ने पढ़ा होगा। कमलाजी ने कपड़े इकट्टे किए, बड़ा उत्साहवर्द्धन हुआ। अरे। वो दौड़ी-दौड़ी कल्पना आ रही हैं, पापा-पापा ऐसा आनंद आ गया, आज तीस कपड़े दुबे साहब के वहाँ से मिल गये, कितना आनंद है। यही आनंद है। कहीं बड़े-बड़े आनंद ढूँढते हो-महलों में। डेढ़ करोड़ की कारों में, न मालुम किस तरह सोने-चाँदी की ईंटों के शहरों में। आनंद छोटी-छोटी बातों का, दीन-दुःखियों के लिए कपड़े मिले तो आनंद आया। प्रशांत ने कहा -पापा, कल मैं 200 कपड़े लेकर आऊँगा अपने मित्रों से।

क्रमशः अगले अंक में...

चरित्र आर्य मयि.

दुनिया इस तृष्णा में या चाहत ही दुःख का कारण है। तृष्णा से मुक्ति पाई जा सकती है। आर्य अष्टांग मार्ग

दुःख सबकुछ दुःख है। तृष्णा से मुक्ति पाई जा सकती है। आर्य अष्टांग मार्ग

दुःख निरोध दुःख निरोध का मार्ग

फुरसत के क्षणों में हम जीवन्-जगत के बारे में मनन करें। मनन स्वयं मार्ग देता है। बुद्धि का वास्तविक परिणाम पठन से नहीं, मनन से आता है। बुद्धि को मनन का मार्ग मिल जाए, तो बुद्धि हमारे सामने समाधानों का सूरज उगा देगी। जीवन की हर समस्या का समाधान व्यक्ति की बुद्धि और उसकी अंतरात्मा में समाया है। हम जीवन के व्यावहारिक पहलुओं पर तो मनन करे ही, जीवन-जगत के आंतरिक पहलुओं पर भी मनन करें। मैं कौन हूँ? मैं जगत में कहां से आया हूँ? मेरे जीवन का मूल स्रोत क्या है? मेरी चेतना कहां उलझी है? अपने स्वभाव की सौम्यता के लिए मुझे क्या करना चाहिए? ये वे पहलू हैं, जिन पर किया गया मनन हमें जीवन की गहराई देगा। महत्व इस बात का नहीं है कि हम कितने वर्ष जीएं, वरन् इसका है कि हम कितने गहरे उतरकर जीएं। बंध्या का जीवन क्या जीना, अपनी समझ को पैदा करके जीएं। सहजतया कहे गए

मनन करें जीवन का



ये तीन सूत्र हमें गहराई देंगे। जीने की कला प्रदान करें। हम जीवन और जगत को पढ़े, समझें और पिंजरे से मुक्त हो चुके पंछी की तरह मुक्त उड़ान भरें।

सम्पादकीय

मनुष्य बहुत कुछ कामनाएँ रखता है। यह चाहिए, वह चाहिए पर जो कुछ वह चाहता है, उसमें से कितना पूरा होता है? शायद नहीं के बराबर। जो चाहें सो पाएँ वाली बात इसी कारण आश्चर्यजनक लग सकती है। भला यह कैसे संभव है? हम जो चाहें सो पाएँ-कैसे हो सकता है? अधिकांश इस पर विश्वास ही न करें, पर दुनिया के एक नहीं लाखों दृष्टांत इस बात के प्रमाण हैं कि जो चाहा, सो पाया..... आखिर कैसे? कोई चमत्कार या जादू के बल पर नहीं, वरन् अपने अन्तःकरण की शक्ति के बल पर पाया। भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करने वाले लोगों को चिंतकों और मानव ज्ञान शास्त्रियों ने निकम्मा और मूर्ख माना है। भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं होती है। 'जब भाग्य होगा, अपने आप काम हो जाएगा' या अभी अवसर कहाँ आया है? अवसर आते ही सारा काम बन जाता है। इस तरह की भावनाएँ केवल अपनी असफलता पर परदा डालने की कोशिश है। इस तरह हम अपनी कमजोरियाँ छिपाते हैं। वास्तव में भाग्य और अवसर नाम की कोई चीज नहीं है। यह केवल मन का वहम मात्र है। कोई भी कार्य करने का अवसर या भाग्य देखना निहायत बेतुकी बात है। जो कर्मयोगी हैं, वह कभी इसकी प्रतीक्षा नहीं करते। धन कुबेर रॉकफ़ैलर का कथन था, 'मैंने कभी भाग्य और अवसर की प्रतीक्षा नहीं की, जब भी काम की बात मन में आई, शुरु कर दिया। मैंने अपने जीवन में प्रत्येक क्षण को ही भाग्य और अवसर माना है।' अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा करना अपनी सफलता को पीछे फेंक देना है। हो सकता है कि जब तक इतना समय निकल जाए कि आप करने पर भी न पा सकें। यदा-कदा भाग्य के फेर में भी मनुष्य अपने जीवन को दुःख से भर लेता है। अतएव भाग्य या अवसर की प्रतीक्षा न कर आप अपना कार्य शुरु कर दें। दूसरों को देखें - लोग उनकी प्रशंसा करते हैं- 'कितना भाग्यशाली है अमुक-' 'अमुक का सितारा बड़ा बुलंद है' -पर क्या 'अमुक' के जीवन में झांकने की कोशिश की, कि 'अमुक' आज जिस शिखर पर है, उस तक पहुंचने के लिए 'अमुक' ने कितना कठोर परिश्रम किया है? अमुक ने क्या-क्या संकट नहीं बर्दाश्त किए? यह तो 'अमुक' का दिल जानता होगा कि वह कैसे उस स्थान तक आया है? दूसरों का सुख, वैभव देखकर आपको ईर्ष्या होती है, पर उस सुख को भोगने वाले दिलों से पूछिए कि कैसे पाया है यह सब?..... और अपने आपको बनाए रखने के लिए उनको अभी भी क्या-क्या करना पड़ रहा है? अतएव जब तक आप इस महत्व को नहीं जानेंगे और केवल 'अवसर', 'भाग्य' की राह देखते रहेंगे, तब तक आप कुछ नहीं कर सकते हैं।

खोये हुये हाथ को मिला संस्थान का साथ

आर.ए.एफ. अधिकारियों ने किया संस्थान अवलोकन



अहमदाबाद से पधारे आर.ए.एफ. अधिकारी श्री टी.सी. भट्ट जी एवं साथियों ने मानव मंदिर विकलांगों सेवा कार्यों का, निःशक्त बच्चों की सेवा का, रोजगार प्रशिक्षण कार्यों का अवलोकन किया। अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल ने बताया कि गांव अस्टर, लखीमपुरी, खिरी, उ.प्र. के परमानंद मीणा जिनका दिवार गिरने से हाथ कट गया था नारायण सेवा संस्थान में उन्हें भेट सा. द्वारा नया हाथ प्रदान किया गया। उनका सम्मान संस्थान निदेशक वन्दना अग्रवाल ने किया। वहा डॉ. मानस रंजन साहू, पलक अग्रवाल भी मौजूद थे।



मुस्कान मानवता की

(मानव धर्म शृंखला का षष्ठम् (6) पुष्प)

जैसे हमारे सुरेन्द्र जी परिवार के मुखिया हैं, रामचरितमानस में गोस्वामी जी महाराज ने चौपाई लिखी- चौपाई

मुखिया मुख सूँ चाहिए, खान पान सूँ एक।

पालक पोषक सकल अंग, तुलसी सहित विवेक। (28)

जैसे हमारे शरीर के पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, फिर हमारे चक्र, माथे पर सहस्रार चक्र, ललाट पर आज्ञा चक्र, हमारे गले में विशुद्धि चक्र, हमारे हृदय में अनाहत चक्र।

पल पल प्यार-आनंद की बहार

सतसंग की है बात तू सूरज है पगले, बैला अमृत, बगतियों को कर

मत किसी को दर्द का सैलाब दो, मत किसी को छलावों का उपहार दो।

देना ही चाहते तुम दोस्त अगर मेरे, आदमी को आदमी का प्यार दो।

मंत्र

ॐ चन्दनम् महत्वपूर्णम् पवित्रम् पापनाशम्

आपदाम् हरतम् नित्यम्, लक्ष्मी तिष्ठते सर्वदा। (29)

'चन्दन विष व्यापे नहीं, लिपटत रहत भुजंग' आपको कुसंग का असर ना हो और कभी कुसंगी मिले नहीं, आपको सत्संगी मिले, इसलिए कहते सत्संग की ये बात,

तर्ज :- कीर्तन की है रात

सत्संग की है बात बालाजी, आज थाने आणो है थाने कोल निभानो है, सत्संग की है बात।.....

सत्संग की है बात, बालाजी आज थाने आणो है।

दरबार बालाजी ऐसों सजीयो प्यारो, दयालु आपको, सेवा में सगला खड़ा दिखे, हुकुम बस आपको, सेवामें माणो आज बिछ जाणो है, थाने कोल निभानो है, सत्संग की है बात बाला जी, आज थाने आणो है। (30)

बालाजी पधार गये, हनुमान जी की कृपा हो गई, रामजी की अनुकम्पा हो गई, कृष्ण भगवान आनन्दित होकर आपको आशीर्वाद दे रहे हैं, शिवजी भगवान की कृपा हो गई, लाला मानव जीवन मिल गया, अब सच्चे धर्म को पहचानना है। हमारे सुरेन्द्र भैया और भाभी जी ने जैसे धर्म को पहचाना। आईये सरस्वती माता की कृपा की वन्दना करें।

तर्ज :- अब सौंप दिया

जब यज्ञ करो प्रारम्भ अगर, चन्दन का तिलक ललाट पे कर।

फिर हाथ बन्धे संकल्प सूत्र, इन्द्रिय निग्रह के वादे कर। (31)

ये छोटे-छोटे गुब्बारे बहुत महँगे नहीं आते, आपके जेब में कुछ गुब्बारे रखना, कोई बच्चे मिल जाये, उसको भगवान का रूप समझकर कर गुब्बारा फुलाकर दे देना, मत पूछना किस जाति का है, मत पूछना किस गाँव का है, मत पूछना किस देश का है, वो मेरे भगवान का है, वो प्रभु के रूप में पधारा है,

नन्ने मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है? मुट्ठी में तकदीर हमारी। (32)

उत्साह रखिये, उल्लास रखिये, उमंग रखिये, मन के जीते जीत सदा है, मन के हारे हार सदा। सावधान! मन हार ना जाये, मन से मानव बना सदा।

तू सुरज है पगले, फिर क्यों अन्धकार से डरता है। तू तो अपनी एक किरण से, जग प्रदीप्त कर सकता है। (33)

आईये सरस्वती माता की कृपा प्राप्त करें - तर्ज :- अब सौंप दिया,

प्रातः उठते ही रहे, चेहरे पर मुस्कान।

पद्मासन में बैठकर, करें प्रभु का ध्यान,। (34)

बेला अमृत में उठ जाणा, ऐसा ना हो, कि अमृत बेला चली जावे, सूर्य भगवान उदीप्त हो जावें, आप व हम आलसी की तरह सोये पड़े रहें, तो किस्मत भी हमारे से नाराज हो जाती है, इसलिए कवि ने कहा था, बेला अमृत गया, आलसी सो रहा, बन अभागा, साथी सारे जगें तू ना जागा। जाग जाईये, जागने का नाम मनुष्यता का धर्म है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीन्ना मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल न्अध्यक प्रबन्धक-स्रोतन लाल गाडनी न्अपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी न्अपादन न्अत्योगी-घनश्याम मिश्र न्अठौड

क्रान्ति-कथा



क्रान्ति-कथा से कल्पना करी

क्रान्ति-है सद्कर्म की कथा-है मानव धर्म की

इधर उधर यू देखते हैं हॉस्पिटल के मैंने नर्स रमनी बाई ने कहा सेठ जी आपको आपके मित्र ने बचा दिया अन्यथा आपके प्राण चले जाते सेठ जी आठ दिनों में आपके उन मित्र ने आपको अपना दो बार एक बार तो खुद का खून दिया एक बार अपनी पत्नी का खून दिया मंहंगी मंहंगी सी औषधि भी आपके लिये कहीं से भी लाये। डॉक्टर से सम्पर्क किया और सेठ जी आपके प्राण बच गये सेठ जी ने चारों तरफ देखा और सोचा दिमाग पर जोर डाला उस बस में मैं अकेला था मेरे साथ कोई नहीं था मेरे परिवार वाले भी नहीं थे, मित्र भी नहीं थे, बन्धु भी नहीं थे, कौनसे मित्र ने मुझे बचा दिया कहा गये वो मित्र मैं नर्स को पूछता हूँ भैया ये लाला, ये बाबु, ये बाबुड़ा, कहा है मेरे मित्र दोनो तरफ दूढ़ा चारो तरफ दूढ़ा बोले महाराज वो तो सेठ साहब वो तो नजर नहीं आ रहे है। आपके साथ गये थे क्या जी मगर मैंने कहा मेरे साथ क्रान्ति कथा थी मेरे साथ जीवन पलटने की कथा थी। मेरे पास ब्रह्मा जी के और उस पुत्र मानस पुत्र लोमश ऋषि की कथा की कथा थी। मैंने सुनी थी कथा मेरा मन उस आनंद में हो गया। उस वैराग्य में हो गया उस समता में हो गया सेठ जी ने सोचा जिन्होंने मेरे को प्राण बांध दिया उन मित्र को तो मैं दूढ़ नहीं पाया। जिस क्रान्ति कथा ने मेरे स्वभाव को अच्छा कर दिया पहले कड़वा बोलता था अब मीठा बोलने लग गया।

बुरा जो खोजन में चला, बुरा न मिलिया कोई। जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोई।।

क्रमशः अगले अंक में...

अपंग, अनाथ, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवार्त्

निःशक्तजनों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। आपश्री से सादर प्रार्थना है कि इश्वरीय कार्य में अपना सहयोग प्रदान करावें-मान्यवर !

मोबाइल/होम एप्लायसेंस रिपेयरिंग/कम्प्यूटर/सिलाई/महेन्दी/अगरबत्ती/हार्डवेयर एण्ड नेटवर्किंग प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 7500/-	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 75,000/-
3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 22500/-	20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 150000/-
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 37500/-	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि 225000/-

50 राशियों की आजीवन भोजन/नाश्ता भिती

वर्ष में एक दिन दोनों समय की आजीवन भोजन भिती सहयोग राशि - 22,000/-
वर्ष में एक दिन एक समय की आजीवन भोजन भिती सहयोग राशि - 11,000/-
वर्ष में एक दिन की आजीवन नाश्ता भिती सहयोग राशि - 5,000/-

बालगृह शिक्षा सहयोग योजना

एक बच्चे के एक माह की शिक्षा सहयोग राशि - 600/-
एक बच्चे के एक वर्ष की शिक्षा सहयोग राशि - 7200/-

आजीवन लालन-पालन योजना 1,00,000/-

आप बन सकते हैं किसी अनाथ निर्धन बच्चे को आजीवन पालनहार। 1 लाख रूपयों का अनुदान करके। (एक बच्चा 18 वर्ष तक की आयु तक अथवा 18 वर्ष के बाद भी यदि वह उच्च शिक्षण प्राप्त कर चाहेगा तो संस्थान के सान्निध्य में ही रहेगा।)

भगवान महावीर बालगृह योजना (बालगृह भोजन भिती)

एक बालक का एक माह का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि - 2100/-
एक बालक का एक वर्ष का नाश्ता, भोजन सहयोग राशि- 2100 X 12 = 25,200/-

एक बच्चे पर सम्पूर्ण वार्षिक खर्च

भोजन खर्च सहयोग राशि - 2100 X 12 = 25,200/-	शिक्षा खर्च - 600 X 12 = 7200/-
स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च - 2500/-	विविध खर्च राशि - 6900/-
कुल वार्षिक खर्च सहयोग राशि - 41800/-	

प्रति निःशक्त शिविर सहयोग राशि - 1,51000/-

सम्पर्क करें-09929534444 E-mail : planning@narayanseva.org

आयकर में छूट-संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 G (आयकर दाता) के लिए 50 प्रतिशत तथा 35 AC के तहत (कम्पनियों, प्रतिष्ठानों के लिए) 100 प्रतिशत कर मुक्त (Tax Exempted)

सादर अनुरोध - आपश्री संस्थान की दान प्राप्ति रसीद वुक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -0294-6622222,9649499999

■ इच्छा शक्ति कल्पवृक्ष के समान है जो आपको हर वो चीज दे सकती है जिसको आप कल्पना करते हैं।



पढ़ेंगे- लिखेंगे होंगे कामयाब